Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 5, May - 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 11/05/2021 Accepted on : 25/05/2021 Publication Date: 31/05/2021

कुषाण मुद्राओं पर अभिव्यंजित शैव परम्परा: एक मुद्रा शास्त्रीय अध्ययन

डॉ. कन्हैया सिंह
पोस्ट डाक्टोरल फेलो, प्राचीन इतिहास विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय वि.वि, गोरखपुर.
Email - dr.kanhaiya459@gmail.com

शोध सारांश : उत्थान, विस्तार एवं पतन की प्रक्रिया प्रकृतिनुरूप ऐतिहासिक साक्ष्यों में अवलोकित है। भारतीय इतिहास में कुषाण वंश का पदार्पण निश्चित रूप से इतिहास में "मील का पत्थर" परिलक्षित होता है, जिसने न केवल राजनैतिक अपितु कला और संस्कृति के साथ अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वाणिज्य में भी चरमोत्कषेता प्राप्त किया। कुषाण शासकों द्वारा पश्चिमोत्तर भारत में बल पूर्वक अधिकार किये जाने का साक्ष्य उपलब्ध है। द्वितीय शताब्दी ई.पू. में चीन की सीमा पर बसी एक खानाबदोस जाति, जो चीनी साहित्य में यूची नाम से संज्ञापित है, पर हिंग-नू कबीले के आक्रमणोपरान्त ये लोग पामीर की पहाड़ी को पार कर, इस्सयकुल झील से होकर बक्षु नदी के किनारे से होते हुए भारतीय सीमा में प्रवेश किया। भारतीय सीमा में प्रवेश करने वाली शाखा क्यू-श्वांग अर्थात कुषाण कही गयी है। यद्यपि अधिकांश विद्वान कुषाणों को विदेशी मूल का स्वीकार करते हैं, तथापि कुछएक भारतीय विद्वान मानते हैं कि कुषाण पूर्णतः भारतीय हैं जो कृषि, कृषक अथवा किसान अथवा कृसान से अभिप्रेरित है। इनका मानना है कि ये लोग किसी कारणवश जीविकोपार्जन हेतु चीन की ओर चले गये थे, समयानुरूप पुनः भारत की ओर वापस आये। जो भी हो इस राजवंश ने भारतीय संस्कृति को शीघ्रता से आत्मसात कर व्यापक स्तर पर स्वर्ण, रजत एवं कांस्य सिक्कों को प्रचलित किया।

बीज शब्द : कुषाण, तृशीष, चतुर्भुज, धर्म, संस्कृति, आयुद्य, कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल, धोती-कुर्ता, जटाधारी, रूद्राक्ष माला, कमण्डल, गोन्दोफर, शक नरेश मावेश, विमकद्फिसस, शिव, OHPO आदि ।

1. उद्देश्य:

उल्लेखनीय है कि कुषाण राजवंश पर अनेको शोध-प्रबन्ध, शोध-पत्र एवं पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं, परन्तु मुद्राओं को आधार बना कर कुषाणों की धार्मिक स्थिति का राजनैतिक विवेचन की जिज्ञासा ने इस शोध-पत्र की ओर ध्यान आकृष्ट किया। ज्ञातव्य है कि कुषाण शासकों ने अपनी मुद्राओं पर विविध धर्म, संस्कृति एवं भाव को एक साथ प्रदशित किया। तदनुरूप शैव परम्परा अथवा शैव परिवार के सदस्यों को उनके वाहन सहित व्यापक स्तर पर स्थान प्रदान किया, साथ ही शिव के ऐसे स्वरूपों को भी अंकित किया जो अन्यत्र कम ही दृष्टिगत हैं।

2. विस्तृत शोध-पत्र :

भारत में स्वर्ण मुद्रा चलाने का श्रेय कुषाण राजाओं को दिया गया है। कुजुलकद्फिसस प्रथम कुषाण शासक है, जिसने कुषाण सत्ता को स्थाई नीव प्रदान की। कुजुलकद्फिसस की ताम्र एवं रजत दोनों प्रकार की मुद्राएं प्राप्त हुई हैं। मुद्राओं पर अप्रशिक्षित कलात्मक विधि से राजा के साथ ही देवी-देवताओं को अभिव्यंजित किया गया है। कर्निघम महोदय का विचार है कि विमकदफिसस की मुद्राओं पर हरमाइस के सिक्कों का प्रभाव दिखायी पड़ता है। उल्लेखनीय है कि हरमाइस एक यवन शासक था। कुषाण कालीन मुद्राओं पर अनेक प्रकार के देवी-देवताओं का अभिव्यंजन प्राप्त होता है। इन मुद्राओं पर यूनानी, परसियन देवी-देवताओं के साथ ही भारतीय देवी-देवताओं तथा उनके प्रतीकों का अंकन किया गया है। इनमें से अधिकांश देवी-देवता शक पहलव मुद्राओं एवं हिन्द-यवन मुद्राओं पर भी दृष्टिगत होते हैं, जिनमे से भारतीय देवता शिव का विवरण निम्न क्रम में दिया गया है।

3. द्विभुज शिव-नन्दी प्रकार की मुद्राएं :

कुषाण मुद्राओं पर भारतीय देवता शिव का तृशीष एवं चारमुखी अंकन बहुतायत से प्राप्त होता है, जिसे धोती-कुर्ता युक्त, जटाधारी, रूद्राक्ष माला एवं कमण्डल, कुल्हाडी युक्त त्रिशूल के साथ अकित किया गया है। कुषाण कालीन मुद्राओं पर अभिव्यंजित शिव के अंकन के साथ ही भारत में कला एवं प्रतिमा विधान का एक नवीन सूत्रपात दिखायी पड़ता है।[1] कुषाण मुद्राओं पर शिव को विभिन्न भंगिमाओं में अंकित किया गया है।[2]

कुषाणों से पूर्व गोन्दोफर[3] तथा शक नरेश मावेश[4] की मुद्रा पर भी षिव का अंकन प्राप्त होता है, जिसमें षिव को त्रिषूल युक्त प्रदर्शित किया गया है। विमकद्फिसस की एक प्रकार की स्वर्ण मुद्रा पर षिव का स्थानक अंकन प्राप्त होता है। यहां शिव को बिना वाहन के प्रदर्शित किया गया है, जिसका आयुद्य कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल बताया गया है।[5] इस मुद्रा पर शिव का जो अंकन प्राप्त हुआ है उसे विभंग कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि यूनानी देवता पोसीडीन को भी स्थानक मुद्रा में कुल्हाडी युक्त त्रिशूल के साथ अंकित किया गया है। हवेनसांग की सी-यू-की में पोसीडीन की आकृति वाले भारतीय देवता को शिव कहा गया है।[6] मुद्राओं पर शिव को जटाधारी तथा व्याघ्रचर्म धारण किये हुए परदर्शित किया गया है।[7] यथा –

कुषाण शासक विमकदफिसस की स्वर्ण मुद्रा के पृष्ठभाग पर दाहिने हाथ में कुल्हाडी युक्त त्रिशूल एवं हार धारण किये हुए प्रभामण्डल युक्त स्थानक भंगिमा में शिव के साथ इनके वाहन नन्दी को भी अभिव्यंजित किया गया है जिस पर शिव का सम्पूर्ण शरीर अवलम्वित है।[8] इस मुद्रा पर शिव के साथ ही सर्वलोग ईश्वरस महीश्वरस का लेख भी प्राप्त होता है, जो शिव को महेश्वर की संज्ञा प्रदान करता है।[9] विमकद्फिसस की एक अन्य स्वर्ण मुद्रा के पृष्ठभाग पर शिव को पूर्ववत प्रदर्शित किया गया है।[10] शिव के वाहन के रूप में नन्दी का उल्लेख रामायण में प्राप्त होता है। विमकदफिसस की मुद्रा पर भी शिव को नन्दी युक्त अंकित किया गया है। विमकदफिसस की मुद्रा के पृष्ठभाग पर शिव को अग्नि युक्त कंधों के साथ भी अंकित किया गया है, जिनके दाहिने हाथ में लम्बा कुल्हाडी युक्त त्रिशूल एवं बायें हाथ में व्याघ्रचर्म तथा लौकी अथवा कद्दू का अंकन किया गया है।[11] विम की एक अन्य मुद्रा के पृष्ठभाग पर षिव को कुल्हाडी युक्त त्रिषूल के साथ प्रदर्शित किया गया है।[12] विम की अन्यत्र मुद्रा पर भी दाहिने हाथ में कुल्हाड़ी युक्त त्रिशूल तथा बायें हाथ में व्यार्धचर्म धारण किये हुए स्थानक भंगिमा में शिव का अभिव्यंजन है।[13] विम की एक अन्य मुद्रा के पृष्ठभाग पर शिव के साथ नन्दी का अंकन प्राप्त होता है। शिव का बायां हाथ नन्दी के सींग पर अवस्थित है। विम की एक अन्य मुद्रा के पृष्ठभाग पर शिव को दाहिने हाथ में कुल्हाड़ी तथा बांये हाथ को नन्दी पर रखे हुए प्रदर्शित किया गया है।

ज्ञातव्य है कि कुषाण शासक विम की मुद्राओं पर शिव को व्याघ्रचर्म धारण किये हुए स्थानक भंगिमा में अभिव्यंजित किया गया हैं। शिव के साथ व्याघ्रचर्म कहां से जुड़ा ? इसका उल्लेख सुप्रभेद आगम में मिलता है।[14] इसमें कहा गया है कि शिव के नंगे स्वरूप के कारण पर्वतवासी स्त्रियां सम्मोहित होने लगी अतः वहां के ऋषियों ने अपने तपोबल से सिंह, व्याघ्र, सर्प, बिच्छु, आदि को उत्पन्न किया, शिवजी ने व्याघ्र को मारकर चर्मधारण कर लिया, अतः कला में व्याघ्रचर्म युक्त प्रदर्शित किये जाने लगे। यह कथानक शिव के व्याघ्रचर्म वाले स्वरूप को पुष्ट करता है।

शिव के साथ व्याघ्रचर्म अंकन के पीछे यह धारणा भी दिखायी पड़ती है कि शिव प्रारम्भिक अवस्था में जनजातीय देवता के रूप में जाने जाते थे। ज्ञातव्य है कि किसी भी संस्कृति के लोग अपने देवता के अभिव्यंजन में उन्ही अस्त्र-शस्त्रों तथा वस्त्राभूषण का प्रयोग करते हैं, जिनका वे उपयोग करते हैं। इसी सन्दर्भ में शिव के उपासक वस्त्र के रूप में पशुओं की खाल का उपयोग करते रहे होंगें, अतः वे शिव के साथ व्याघ्रचर्म धारण कराया। उल्लेखनीय है कि व्याघ्र एक भयानक एवं आतंक देनेवाला जीव था, जिसके चर्म का उपयोग उसके आतंक पर विजय का सूचक है।

4. त्रिशीर्ष एवं चतुर्भुज शिवांकन :

विमकद्फिसस की स्वर्ण मुद्रा पर शिव को त्रिषीर्श युक्त, नन्दी के साथ कुल्हाडी युक्त त्रिशूल धारण किये हुए प्रदर्शित किया गया है। वासुदेव की एक मुद्रा पर शिव को त्रिशीर्ष एवं चतुर्भुजी देवता के रूप में प्रदर्शित किया गया है।[15] वासुदेव की ही मुद्रा पर शिव को त्रिशीर्ष एवं द्विभुज प्रदर्शित किया गया है।[16] हुविष्क की मुद्रा पर भी चतुर्भुज शिव को अभिव्यंजित किया गया है।[17] कनिष्क की मुद्रा पर शिव को पाश के साथ अभिव्यंजित किया गया है।[18] एक अन्य मुद्रा पर पाश युक्त शिव को वृषभ के साथ अंकित किया गया है, जो निःसन्देह शिव की आकृति कही जा सकती है। प्रारम्भिक अवस्था में भगवान शिव के साथ भी पाश का अंकन प्रदर्शित किया गया था। कुषाण शासकों के स्वर्ण एवं ताम्र मुद्रा पर OHPO का लेख प्राप्त होता है।[19] जेम्स प्रिंसेप ने इस लेख को संस्कृत का अर्क कहा है, जिसका अर्थ सूर्य बताया जाता है। परन्तु प्रो. लेसन ने इस लेख को उग्र पढ़ा है जिससे रूद्र का बोध होता है। यह स्वरूप एक चित्र से स्पष्ट होता है, जिसमे शिव को चतुर्भुज भंगिमा में त्रिशूल एवं नन्दी के साथ प्रदर्शित किया गया है।[20]

उदाहरणार्थ –

हुविष्क की मुद्रा पर प्राप्त चतुर्भुज शिव की प्रतिमा को महेश की प्रतिमा कहा जा सकता है। चतुर्भुज प्रतिमा का उल्लेख गोपीनाथ राव ने किया है। शिव की चतुर्भुज प्रतिमा के सापेक्ष भारतीय धार्मिक कला में खजुराहो में एक शिव की प्रतिमा उत्कीर्ण की गयी है, जिसमें शिव को चतुर्भुज एवं सम्भवतः चतुर्मुखी प्रदर्शित किया गया है।[21] आदित्य पुराण में धर्म को चारमुख तथा चतुर्भुज वर्णित किया गया है, सम्भव है कि कुषाण मुद्रा की आकृति इसी से प्रेरित होकर बनायी गयी हो।[22] मैक्समुलर जैसे विद्वान ने भी OHPO लेख को उग्र पढ़ा है, तथा उसका सम्बंध शिव से स्थापित किया है। कुषाण कालीन एक मुद्रा पर शिव को त्रिशूल के साथ नन्दी तथा चन्द्रयुक्त प्रदर्शि किया गया है।[23] इस अंकन में चन्द्र को देवता के सिर पर अभिव्यंजित किया गया है।

ज्ञातव्य है कि भारतीय प्रतिमाशास्त्र में शिव को चन्द्रशेखर भी कहा गया है। इस प्रतिमा में चन्द्र अंकन के साथ ही वृषभ का होना निःसन्देह भारतीय शिव का बोध कराता है। दक्षिण भारत में चन्द्रशेखर प्रतिमा को प्रदर्शित करने के लिए चतुर्भुज स्वरूप बनाया गया है।[24] कनिष्क की मुद्रा पर शिव के लिए ओयषो की उपाधि प्राप्त होती है, जिसे शिव का प्रयाय माना गया है। [25] इसी मुद्रा पर शिव को धोती पहने हुए प्रदर्शित किया गया है, जो पूर्णतः भारतीय परिवेश में बनाया गया प्रतीत होता है। निःसन्देह यह शिव का भारतीय स्वरूप में अंकन है। कनिष्क और हुविष्क की मुद्रा पर अभिव्यंजित शिव प्रतिमाविधान की एक नयी परम्परा का सूत्रपात करते हैं, जिसमें शिव को द्विभुज तथा चतुर्भुज स्वरूप में प्रदर्शित किया गया है। भारतीय कला में भी कालान्तर में ऐसा ही अंकन प्राप्त होता है।[26] भारतीय संग्रहालय में संरक्षित एक ताम्र मुद्रा पर शिव को भाला अथवा दंड के साथ, गदा लिए हुए प्रदर्शित किया गया है। उल्लेखनीय है कि भारत में प्रारम्भ से ही शिव के साथ दण्ड का अंकन प्राप्त होता है। यह अंकन चतुर्भुज प्रतिमा में भी प्राप्त होता है।[27] भारतीय कला में शिव के साथ डमरू का भी अंकन प्राप्त होता है।

इस प्रकार कुषाण शासकों की मुद्राओं पर शिव का प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट अंकन पूर्णतः भारतीय प्रतिमा विधान के अनुरूप है। व्हाईटहेड महोदय ने कुषाण मुद्रा पर अंकित वृषभ नन्दी युक्त प्रतिमा को अर्द्धनारीश्वर की प्रतिमा स्वीकार किया है।[28] इनका विचार है कि इस प्रतिमा में दाहिनी तरफ वक्ष का उभार स्त्री का बोध कराता है जिसके गले में हार प्रदर्शित किया गया है।[29] इस प्रतिमा के बायें वक्ष स्थल पर यज्ञोपवीत प्रदर्शित किया गया है, जो शिव के अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा का बोध कराता है।

द्रष्टव्य है कि भारतीय प्रतिमा विधान में अर्द्धनारीश्वर की प्रतिमा का उल्लेख प्राप्त होता है। आगमों में भी अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा का उल्लेख प्राप्त होता है। कालिदास ने भी अर्द्धनारीष्वर प्रतिमा का उल्लेख किया है यथा-

"जगतः पितरौवन्देपार्वती परमेश्वरौ"

शिव पुराण के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के साथ प्रजापति को उत्पन्न किया। परन्तु उनको यह आभास हुआ कि स्त्री के बिना पुरुष सृष्टि की ओर अग्रसर नहीं हो सकते, अतः महेश्वर की प्रार्थना किया, तब महेश्व अर्द्धनारीश्वर के रूप में प्रकट हुए। उल्लेखनीय है कि ऐलीफैंटा की गुफाओं में अर्द्धनारीश्वर की प्रतिमा प्राप्त हुई है, जिसके बायें भाग में नारी के केश, मयूरमेखला, नूपुर तथा पयोधर स्पष्ट दिखायी पड़ते है। दाहिनी तरफ पुरुष को जटा मुकुट तथा सर्प एवं परशु तथा वीणा के साथ प्रदर्शित किया गया है। यथा-

अर्द्धनारीश्वरोदेव कथ्यते लक्षणान्वितः।
दक्षिणं पुरुषकार वामं योशिन्मय वपुः।। शिल्परत्न

मध्यपूर्व काल में प्रतिहार[30] तथा बंगाल के सेनवंशी शासकों[31] के अभिलेखों में भी अर्द्धनारीश्वर की स्तुति की गयी है। स्पष्टतः कुषाण मुद्राओं पर अभिव्यंजित शिव प्रतिमा विधान का अंकन कालान्तर में भी होता रहा, जो आज भी शिव के आधुनिक स्वरूप को प्रस्तुत करता है।

5. ओम्मो या उमा :

कुषाण शासकों की मुद्राओं पर न केवल शिव अपितु उमा का भी अंकन प्राप्त होता है। कर्निंघम महोदय ने 1892 ई. में 'न्यूमिस्मेटिक्स क्रानिकल' में हुविष्क का एक सिक्का प्रकाशित किया। इस मुद्रा के पृष्ठ भाग पर उमा का अंकन है, जिसकी पहचान ओम्मो लेख से संभव हो सका। रैपसन महोदय इस देवी के हाथ में कमल पुष्प का अंकन स्वीकार करते हैं।[32] हुविष्क की स्वर्ण मुद्रा पर शिव को चतुर्भुज स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है।[33] इसमें सामने एक स्त्री आकृति बनायी गयी है, जो दाहिनी तरफ खड़ी है। इसमें शिव को हिरण के साथ प्रदर्शित किया गया है। शिव के साथ डमरू का भी अंकन प्राप्त होता है, देवी के हाथ में एक कमल पुष्प भी अंकित किया गया है, जिसमें चार कांटेदार आकृति प्रदर्शित की गयी है। इसमें देवी का विरूद् ननना प्राप्त होता है।

हुविष्क की मुद्रा पर अभिव्यंजित यह देवी अर्थात् कमल पुष्प धारिणी देवी को 'उमा' कहा जा सकता है। कुछ विद्वान इस नारी आकृति को जेरोस्ट्रेरियन देवी मानते हैं, परन्तु बी.एन. मुकर्जी[34] तथा बी.एन. पुरी[35] इसे पूर्णतः भारतीय देवी 'उमा' स्वीकार करते हैं। स्टेन महोदय ननना का सम्बंध जेरोसट्रेनियन देवी के साथ स्थापित करना चाहते हैं।[36] बी.एन. मुकर्जी ने बहुत ही तर्कपूर्ण विधि से 'उमा' का सम्बंध शिव अर्थात ओयषो के साथ स्थापित किया है। इनका विचार है ओयषो षब्द की उत्पत्ति 'विषा' से हुई है, जिसको प्रकृति भाषा में 'वरश' कहा गया है। इसको पुष्ट करने हेतु उन्होंने बताया कि जिस प्रकार 'वोसकी 'को हुविष्क कनेश्को को कनिष्क आदि बताया गया है उसी प्रकार 'वरश' भी आयषो का प्राकृत रूपान्तरण है, जिसका अर्थ वृषभ होता है। उल्लेखनीय है कि भारत में शिव के प्रदर्शन हेतु वृषभ का अंकन होता रहा है। इस प्रकार कह सकते हैं कि ओयसो-वरश-विषा-वृषभ न केवल शिव के वाहन नन्दी का द्योतक है, अपितु शिव के प्रत्यक्ष स्वरूप को भी प्रकट करता है।[37]

इसी प्रकार OMMO को 'उमा' के रूप में रूपान्तरित किया जा सकता है। मुद्राओं पर लेख को भी डा0 भण्डारकर ने वृषभ अंकन के आधार पर शिव से सम्बद्ध करते हुए उमा अथवा अम्बा से सम्बद्ध किया है।[38] उमा शिव की पत्नि के रूप में जानी जाती हैं। उत्तर वैदिक कालीन ग्रन्थों में उमा ,अम्बा अथवा दुर्गा का नाम मिलता है। केनोपनिषद में उमा को ब्रह्मविद्या का मानुषी रूप बताया गया है।[39] वेदान्तों में भी महामाया का नाम प्राप्त होता है। [40] हुविष्क की कुछ मुद्राओं पर शिव के साथ ननाा का अंकन प्राप्त होता है जिसका सम्बंध उमा से स्थापित किया जा चुका है। [41] उल्लेखनीय है कि एजेज की मुद्रा पर भी एक देवी को कमल पुष्प के साथ प्रदर्शित किया गया है, जिसे पुष्कलावती की नगरदेवी कहा गया है। बी.एन.मुकर्जी इसका सम्बन्ध उमा अथवा अम्बा से स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं।[42] इस मुद्रा पर देवी की आकृति के साथ सिंह का अग्रभाग भी प्रदर्शित किया गया है।[43] अतः देवी के साथ सिंह का अंकन उसे प्रत्यक्ष रूप से अम्बा अथवा दुर्गा से सम्बद्ध करता है। सर्वप्रथम बी.एन. पुरी ने ननाा का समीकरण सिंह को आधार बना कर दुर्गा के साथ स्थापित किया। बी.एन.पुरी महोदय भी डी.आर. भण्डारकर के मत का समर्थन करते हुए कहते हैं कि उच्चारण की दृश्टि से भी ननाा और दुर्गा में समानता दिखायी पड़ती है।[44]

ऋग्वैदिक काल में अम्बा अथवा अम्बित्मा का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसे मातृदेवी के रूप में व्यक्त किया गया है। वाजसनेयी संहिता में रूद्र और अम्बा का स्पष्ट स्परूप प्रदर्शित किया गया है। इस धर्म ग्रन्थ में उमा को शिव की बहन बताया गया है।[45] शतपथ ब्रम्हण में भी शिव की बहन के रूप में अम्बा का उल्लेख प्राप्त होता है। कालान्तर में अम्बा को शिव के साथ कई रूपों में प्रदर्शित किया गया। अमरकोश में शिवा, भवानी, श्रावणी आदि का उल्लेख मिलता है। यथा-

शिवा भवानी रूद्राणी श्रावणी सर्वमंगला।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मदिर्नि चण्डिके अम्बिका।।[46]

इस श्लोक में अम्बा का कई स्वरूप उभरकर सामने आता है। इसमें पावर्ती को शिव की पत्नी कहा गया है। इस प्रकार वैदिक देवी अम्बा अथवा अम्बित्मा का समीकरण ननाा, ननैया से स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि दोनों ही मातृदेवियों के रूप में प्रदर्शित हैं। कुशाण मुद्राओं पर ननाा को सिंह के साथ भी प्रदर्षित किया गया है। भण्डारकर महोदय स्वीकार करते हैं कि देवी ननाा का यदि भारतीय प्रतिमा विधान के अनुरूप अध्ययन किया जाय तो उसका सम्बंध भारतीय देवी अम्बा अथवा दुर्गा से स्थापित किया जा सकता है। ननाा देवी को न केवल मातृदेवी अथवा प्रजनन एवं उत्पादन की देवी इस्तर के समकक्ष रखा गया है, अपितु बेबिलोनियन समाज में इसे प्रेम की देवी कहा जाता है।[47] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मातृदेवी की उपासना मानव उद्भव के साथ ही प्रारम्भ दिखायी पड़ता है। ननाा का सम्बन्ध दुर्गा के साथ स्थापित करना गलत नहीं होगा, क्योंकि गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम के राजा-रानी प्रकार अर्थात् चन्द्रगुप्त कुमारदेवी प्रकार की स्वर्णमुद्रा के पृश्ठ भाग पर देवी ननाा को कमल पुष्प के साथ सिंहवाहिनी के स्वरूप में प्रदर्शित किया गया है।[48]

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कुषाण काल में ही ननाा का समीकरण दुर्गा अथवा अम्बा के साथ स्थापित हो चुका था, जो भारतीय तथा विदेशी संस्कृति के सम्मिश्रण को प्रदर्शित करता है। कुषाण काल में देवियों को पूर्ण भारतीय स्वरूप प्रदान किया जा रहा था। अतः स्पष्ट है कि विदेशी शासकों द्वारा विस्तृत पैमाने पर भारतीय संस्कृति को ग्रहण किया गया। हुविष्क की मुद्रा पर अभिव्यंजित देवी को भारतीय देवता शिव के साथ प्रदर्शित करना निःसन्देह भारतीयकरण की प्रक्रिया को अभिव्यक्त करता है। कालान्तर में ननाा का यही स्वरूप सिंह वाहिनी दुर्गा के रूप में विख्यात हुआ। दोनों ही मातृदेवियां हैं, अतः इनका समीकरण स्थापित होना स्वाभाविक था।

6. स्कन्द :

स्कन्द को भारतीय जनमानस में शिव का पुत्र स्वीकार किया गया है। हुविष्क की मुद्रा पर स्कन्द कार्तिकेय का अंकन प्राप्त होता है, जिसमें स्कन्द को प्रभामण्डल युक्त प्रदर्शित किया गया है। उल्लेखनीय है कि भारत में स्कन्द को युद्ध देवता कहा गया है। जिन्हें विशाख, कुमार तथा महासेना आदि कहा गया है। हुविष्क की मुद्रा पर एक देवता को मुकुट पहने हुए प्रदर्शित किया गया है, जिसके दाहिने हाथ में एक पक्षी तथा बांये हाथ में तलवार अभिव्यंजित है।[49] हुविषक की कुछ मुद्राओं पर मकानो विरूद् प्राप्त होता है साथ ही एक पक्षी का भी अंकन प्राप्त होता है।[50] यह पक्षी मयूर स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार अंकित देवता को स्कन्द कार्तिकेय माना गया है, परन्तु हुविष्क की मुद्रा पर अभिव्यंजित कुमार की आकृति यौधेय मुद्राओं की आकृति से काफी भिन्न दिखायी पड़ती है।

हुविष्क की एक अन्य मुद्रा पर विशाख के साथ ही कुमार का अंकन किया गया है। विशाख के साथ मयूर पक्षी को प्रदर्शित किया गया है। दोनों ही आकृति भी कमर में तलवार प्रदर्शित किया गया है। विशाख के बायें हाथ में भाला अंकित किया गया है, जिसके साथ स्कन्दो कुमारो विजागो का विरूद प्राप्त होता है।[51] हुविष्क की एक अन्य मुद्रा पर स्कन्द-कार्तिकेय एवं विशाख के मध्य कुमार तथा महासेना को प्रदर्शित किया गया है, जिसका विरूद SKANDO, KOMARO, MAACHNO, BIZAGO अर्थात स्कन्द, कुमार, महासेना तथा विशाख प्राप्त होता है।[52]

डी.आर. भण्डारकर हुविष्ककी मुद्रा पर प्राप्त स्कन्द कुमार, महासेना और विशाख को अलग-अलग देवता स्वीकार करते हैं।[53] परन्तु आर.जी. भण्डारकर उक्त अंकन को एक ही देवता की विभिन्न भंगिमा को स्वीकार करते हैं।[54] जे.एन बनर्जी भी हुविष्क की मुद्रा पर अभिव्यंजित चारो नामों को एक ही देवता का स्वीकार करते हैं।[55] महाभारत में भी स्कन्द, कुमार, विशाख तथा महासेन नाम, एक ही देवता के लिए प्रयुक्त हुआ है।[56] रामायण में विशाख को स्कन्द का भ्राता कहा गया है।[57] महाभाष्य में विषाख एवं स्कन्द का उल्लेख दो स्वतंत्र देवता के रूप में हुआ है।[58] मत्स्य पुराण में कार्तिकेय के चार भाइयों-कुमार, शाख, विशाख, और नैगमेश का उल्लेख है।[59] कश्यप संहिता के 26वें श्लोक में कुमार के तीन भाइयों, शाख, विशाख व नैगमेश का उल्लेख प्राप्त होता है।[60] गोपीनाथ राव ने स्कन्द के परिवार के आठ सदस्यों का उल्लेख षडमुख, शक्ति, पणि, कार्तिकेय, गुह, स्कन्द, मयूरवाहन, सेनानी और शक्तिहस्तवन के रूप में किया है।[61] कर्निघम इन सभी नामों को एक ही देवता स्कन्द-कार्तिकेय से सम्बन्धित करते हैं। इन्होंने इन नामों को भारतीय युद्ध देवता के साथ सम्बद्ध किया है।

भारतीय देवता स्कन्द-कार्तिकेय को इरानियन युद्ध के देवता आरलैग्रों के समान प्रदर्शित किया गया है। इरानी युद्ध देवता के हाथों में तलवार अथवा भाला को प्रदर्शित किया गया है, साथ ही एक पक्षी की आकृति भी उकेरी गयी है। ठीक वैसा ही अंकन भारतीय युद्ध देवता कार्तिकेय के अंकन में भी किया गया है, जिसमें कार्तिकेय को भाला अर्थात् शक्ति के साथ पक्षी युक्त प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कुषाण काल में भारतीय संस्कृति में इरानी, यूनानी, पार्सियन परम्परा के तत्व विद्यमान थे। सांस्कृतिक उत्थान तथा चतुर्दिक व्यापारिक गतिविधियां एवं बहुतायत शुद्धता वाली स्वर्ण मुद्राएं इस काल को स्वर्ण काल की संज्ञा दिलाने में समर्थ परिलक्षित होती हैं।

7. सारांश:

कुषाण कालीन मुद्राओं के अध्ययन से ज्ञात होता है कि निःसन्देह विदेशी शासक भारतीय देवी-देवताओं को ग्रहण करने लगे। यह अवस्था पूर्णतः धार्मिक सहिष्णुता की प्रतीत होती है, क्योंकि सम्पूर्ण भारत में विभिन्न पंथ एवं धर्म के देवी देवताओं का समावेश हुआ साथ ही कई विदेशी शासकों ने भारतीय धर्म और कला तथा प्रतिमा विधान को अपनाया। कुषाण कालीन लोककला, राजकीय कला एवं धर्म की व्यापकता तथा धार्मिक सहिष्णुता की झलक न केवल धर्म तथा कला में दृश्यगत है बल्कि तत्कालीन मुद्राएं भी इस तथ्य को पुष्ट करती हैं। निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि जो भी भारत आया, वह यहां की संस्कृति से बच नहीं सका। अपितु यहीं का होकर रह गया। प्राचीन भारतीय धार्मिक तत्वों को देखकर ऐसा लगता है कि जिस प्रकार सभी नदियां समुद्र में आकर विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार विश्व के सभी धर्म एवं संस्कृति के तत्व भारतीय संस्कृति में मिलकर पूर्णतः भारतीय बन जाते हैं। इसी लिए भारतीय संस्कृति को संस्कृतियों का गलन-पाल (मेल्टिंग पाट) कहा जाता है।

सन्दर्भ:

1. मुकर्जी, बी.एन.- दि राइज एण्ड फाल आफ दी कुषान एम्पायर, साउथ एशिया बुक – 1988, पृ. 3.
2. जे.एन.एस.आई., तीस, 1968, पृ. 195.
3. एलन, जान- बी.एम.सी, टस्टी आफ ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन, 1968 पृ. 75.
4. व्हाइटहेड, पी.एम.सी0 लाहौर भाग एक पृ.151.
5. पूर्वोक्त-व्हाइटहेड, पृ. 101,बनर्जी, जे.एन.-डी.एच.आई. मुन्शीराम मनोहरलाल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1986 पृ. 120-21.
6. सिंह, शत्रुधन शरन- अर्ली क्रायंस आफ नार्दन इण्डिया: एन आइकनोग्राफिकल स्टडी, कलकत्ता 1982, प्लेट 9.
7. वाटर-आन युवांग चवांग, पृ. 214.
8. सी.आई.आई.-स्टैन, 1958 भाग दो, पृ. 102, प्लेट 20.
9. बी.एम.सी., प्लेट 17.31
10. उपाध्याय, वासूदेव- प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान,चैखम्भा प्रकाशन, वाराणसी,1982 पृ. 94.
11. बी.एम.सी. प्लेट 25.7.
12. पी.एम.सी. प्लेट 17.32.
13. बी.एम.सी. प्लेट 25.10.
14. एन.सी., पूर्वोक्त, पृ. 232.
15. उपाध्याय, वासूदेव- प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, चैखम्भा प्रकाशन वाराणसी, 1982 पृ. 92.
16. जे.ए.एस.बी., 30, पृ. 108
17. गार्डनर, बी.एम.सी. पृ. 159 प्लेट 29.10
18. कनिगंहम - क्रायंस आफ इण्डोसीथियन, षक एण्ड कुषान वाराणसी, 1977, पृ. 67 प्लेट 23.6
19. सिन्हा, बी.पी.- वैशाली एक्शवेसन , पटना 37.57/157
20. विल्सन - एरियाना एंटिक्वेरी- पृ. 361,
21. उपरोक्त पृ. 361, डी.एच.आई., पृ. 448
22. वासुदेव उपाध्याय, पृ. 102
23. विल्सन-पूर्वोक्त, पृ. 378 प्लेट 14.12/13
24. वासुदेव उपाध्याय, पृ. 92
25. विल्सन-पूर्वोक्त, पृ. 378 प्लेट 14.14/18
26. डी.एच.आई.-जे.एन.बनर्जी, पृ. 122
27. जे.एन.एस.आई. 30,1968 पृ. 195
28. पी.एम.सी.-व्हाइटहेड, प्लेट 19.231
29. एपि.इण्डिया भाग 19 पृ. 175
30. उपरोक्त भाग 14, पृ. 159
31. सिंह, ओकारनाथ प्राचीन भारतीय मुद्राएं, वाराणसी पृ. 203
32. बी.एन.मुकर्जी- पूर्वोक्त पृ. 113
33. उपरोक्त, पृ. 14-20

34. इण्डियन कल्चर-बी.एन.पुरी भाग आठ, पृ. 225
35. उपरोक्त पृ. 225
36. पूर्वोक्त-बी.एन.मुकर्जी, पृ. 14
37. भण्डारकर, डी.आर., एंसियंट इण्डिन न्यू.क्रो. लेक्चर, 1921, पृ. 17
38. पूर्वोक्त- बी. चटोपाध्याय, पृ. 106
39. पूर्वोक्त-बी.एन.मुकर्जी, चित्र 18
40. उपरोक्त चित्र 17
41. उपरोक्त चित्र 16
42. बी.एन.पुरी- दि एज आफॅ कुशानाज पृ. 226
43. वाज.सं. 3.57, तै.ब्र.-1.6.10,
44. अमरकोष-1.37.38
45. शत्रुधन शरण सिंह, पृ. 114
46. गुप्त कालीन मुद्राएं-अल्तेकर, पृ. 33
47. पूर्वोक्त-गार्डनर, प्लेट 27.16
48. उपरोक्त प्लेट 28.10
49. गार्डनर- दि ब्रिटिश म्यूजियम,लन्दन 1986 प्लेट 28.22.23
50. उपरोक्त प्लेट 28.24
51. क्रानि. लेक्चर्स, 1921, पृ. 22,23
52. कलेक्ट वर्कस भाग चार पृ. 215
53. जे.एन.बनर्जी, - डी.एच.आई. पृ. 146
54. महाभारत अनु.पर्व 86.12/14
55. रामा. 1.22.9
56. भण्डारकर - वैष्णविज्म, शैविज्म, एण्ड एन अदर रीलिजन सिस्टम, कलकत्ता, 1968 पृ. 150
57. अग्रवाल ,वी.एस.- म.पु. ए स्टडी, वाराणसी, 1954, पृ. 61-70.
58. उपरोक्त पृ. 61
59. राव, टी.एच. गोपीनाथ- इ.एच.आई., मद्रास, 1964, भाग दो, खण्ड 2 पृ. 258.